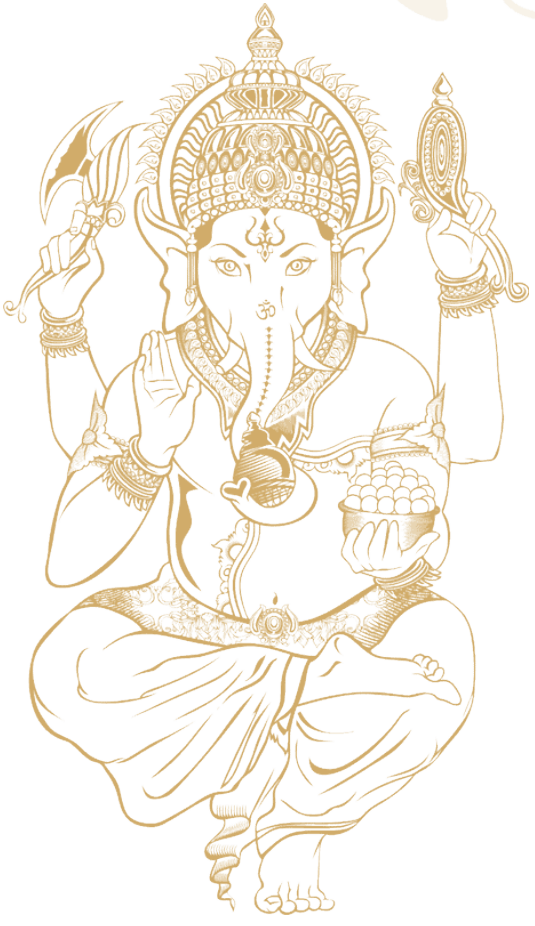

Bebi badal santosh

14 Jul 1975

08:00 PM

Karnal

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120405201

तिथि 14/07/1975 **समय** 20:00:00 **वार** सोमवार **स्थान** Karnal **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:31:11
अक्षांश 29:41:00 उत्तर **रेखांश** 76:59:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:22:04 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	15:05:16 घं
वेलान्तर	00:05:42 घं
सूर्योदय	05:30:56 घं
सूर्यास्त	19:24:23 घं
चैत्रादि संवत	2032
शक संवत	1897
मास	आषाढ़
पक्ष	शुक्ल
तिथि	7
नक्षत्र	हस्त
योग	परिघ
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	महिष
नाड़ी	आद्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	पू-पूजा
पाया(रा.-न.)	रजत-रजत
होरा	चंद्र
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

चन्द्र 8वर्ष 6मा 15दि
शनि
28/01/2025
28/01/2044

शनि	31/01/2028
बुध	10/10/2030
केतु	19/11/2031
शुक्र	19/01/2035
सूर्य	01/01/2036
चन्द्र	01/08/2037
मंगल	10/09/2038
राहु	17/07/2041
गुरु	28/01/2044

योगिनी

संकटा 6वर्ष 10मा 0दि
भ्रामरी
14/05/2024
14/05/2028

भ्रामरी	23/10/2024
भद्रिका	14/05/2025
उल्का	13/01/2026
सिद्धा	24/10/2026
संकटा	13/09/2027
मंगला	24/10/2027
पिंगला	13/01/2028
धान्या	14/05/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			08:47:27	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			28:01:07	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	सम राशि	1.35	भ्रातृ	पितृ	क्षेम
चंद्र			11:56:38	कन्या	हस्त	1	चंद्र	राहु	मित्र राशि	1.42	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			15:55:07	मेष	भरणी	1	शुक्र	सूर्य	स्वराशि	1.36	मातृ	भ्रातृ	मित्र
बुध			09:55:38	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	गुरु	स्वराशि	0.96	कलत्र	ज्ञाति	विपत
गुरु			29:37:53	मीन	रेवती	4	बुध	शनि	स्वराशि	1.13	आत्मा	धन	साधक
शुक्र			10:01:48	सिंह	मघा	4	केतु	शनि	शत्रु राशि	1.02	ज्ञाति	कलत्र	वध
शनि		अ	28:51:08	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	सूर्य	मित्र राशि	1.18	अमात्य	आयु	क्षेम
राहु	व		06:02:43	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	बुध	शत्रु राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु	व		06:02:43	वृष	कृतिका	3	सूर्य	बुध	सम राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

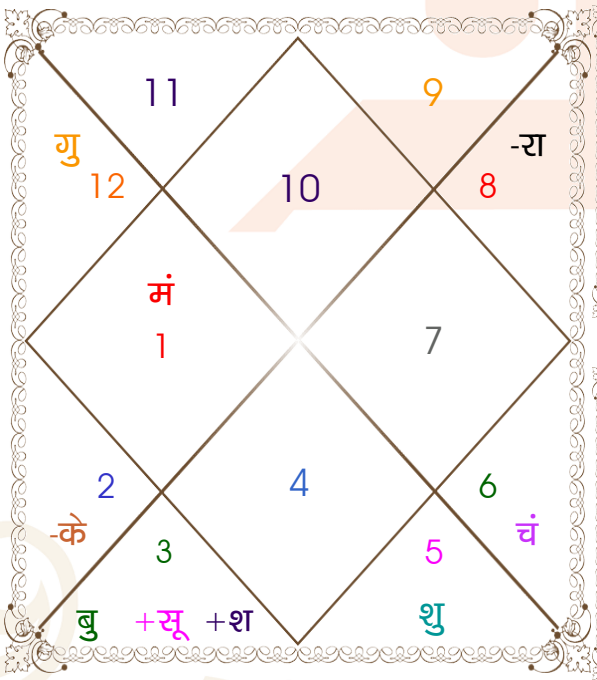

चन्द्र कुंडली

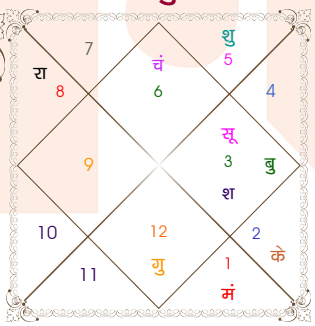

नवमांश कुंडली

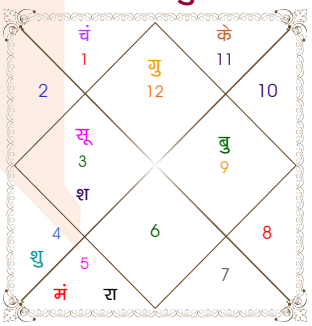

सर्वाष्टकवर्ग

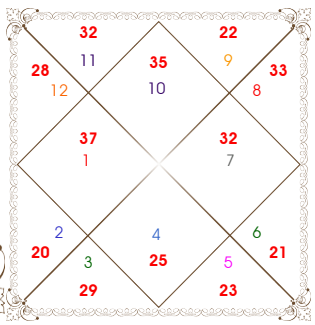

दशमांश कुंडली

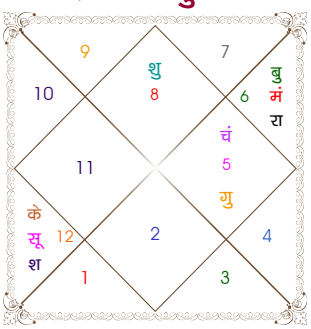

नक्षत्रफल

आप हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि कन्या तथा राशिस्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि महिष, गण देव, वर्ण वैश्य, वर्ग श्वान तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "पु" या "पू" अक्षर से प्रारम्भ होगा यथा- पुनीता, पूर्णिमा आदि।

आप स्वभाव से ही दानशील प्रवृति से युक्त रहेंगी तथा समय समय पर जीवन में अपनी इस प्रवृति का पालन करती रहेंगी। आप पूर्ण रूप से मनुष्यता के गुणों से सम्पन्न रहेंगी। समाज में आप एक यशस्वी महिला होंगी तथा दूर तक आपका यश फैला रहेगा। समाज के सभी लोगों के मन में आपके प्रति पूर्ण मान सम्मान की भावना रहेंगी। ब्राहमण तथा देवताओं की आप भक्त होगी तथा समय समय पर उनकी पूजा एवं सत्कार करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप अपने जीवन काल में सर्वप्रकार की धन सम्पति को अर्जित करेंगी तथा जीवन भर उससे सम्पन्न रहेंगी ।

दाता मनस्वी सुतरां यशस्वी भूदेवदेर्वाचनकृत्प्रयत्नतः।
प्रसूति काले यदि यस्य हस्तो हस्तोद्गता तस्य समस्तसम्पत्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक दाता, मनस्वी, अतियशवाला, देवता और ब्राह्मणों का भक्त तथा सर्वप्रकार की सम्पति से सदैव युक्त रहता है।

आप संसार में समस्त भौतिक तथा सांसारिक पदार्थो का सुख पूर्वक उपभोग करने में सफल होंगी तथा परलौकिक कार्यों के लिए भी दान पुण्यादि कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आप अत्यन्त ही बुद्धिमती होंगी तथा विद्धता के सभी गुणों से युक्त रहेंगी। परोपकार की भावना से आपका अर्न्तमन परिपूर्ण रहेगा तथा समाज में लोगों की भलाई के कार्यों को सम्पन्न करने में आप हमेशा हार्दिक उत्सुकता प्रदर्शित करेंगी एवं तन मन धन से ऐसे कार्यों की सफलता के लिए अपना सहयोग प्रदान करेंगी। धन से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगी तथा इसके अभाव की कभी भी प्रतीति नहीं होगी।

हस्तर्क्षे यदि कामधर्मनिरतः प्राज्ञोपकर्ता धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात हस्त नक्षत्रोत्पन्न जातक सांसारिक भोग्य पदार्थ तथा पारलौकिक शुभ कर्मो को करने वाला तथा धनवान होता है।

आप हृदय से हमेशा उत्साही रहेंगी तथा इसी उत्साही प्रवृति से जीवन के कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही लज्जा के भाव से भी आप युक्त रहेगी। आप मन से कभी कभी कठोरता का प्रदर्शन भी करेंगी।

उत्साही धृष्टः पानपोळघृणी तस्करो हस्ते।
बृहज्जातकम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक उत्साही, लज्जाहीन, मदिरा का सेवन करने वाला, घृणा न करने वाला एवं तस्कर होता है।

आप समय के अनुकूल असत्य बोलने में भी नहीं चूकेंगी अर्थात् मिथ्या भाषण प्रयोग करेंगी। आप के स्वभाव में यदा कदा कठोरता का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही समीपी बन्धु बान्धओं से भी आप युक्त रहेंगी परन्तु इनसे आपको अल्प मात्रा में ही सहयोग मिल सकेगा।

असत्यवचनो धृष्टः सुरापी बन्धुवर्जितः।
हस्तो जातो नरश्चौरो जायते पारदारिकः।।
मानसागरी

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक झूठ बोलने वाला, निर्लज्ज, मद्यपान करने वाला बन्धुओं द्वारा वर्जित, चोर तथा अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में सपरिवार धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने के लिए भी आप नित्य तत्पर एवं उत्सुक रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित रहेंगे तथा तीर्थयात्रा करने के लिए भी सदैव यत्नशील एवं उद्यत रहेंगी। आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों एवं ऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग भी करेंगी। साहित्य या काव्यशास्त्रादि के प्रति भी आपका आकर्षण रहेगा एवं समयानुसार आप इनका अध्ययन भी करेंगी। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य प्रथम प्रयत्न में ही सफल हो जाया करेंगे। बन्धुवर्ग से आपका विशेष स्नेह का भाव रहेगा एवं उनसे नित्य सहयोग एवं सहायता प्राप्त करती रहेंगी। आप एक सौभाग्यशाली महिला भी होंगी एवं धार्मिक तथा देव पितृ संबंधी कार्यों में नित्य निष्ठावान होंगी। इसके अतिरिक्त आप हमेशा सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी एवं गुणवान पुत्रों से प्रसन्नता प्राप्त करेंगी।

कन्या राशि में उत्पन्न होने के कारण आपके हाथों की लम्बाई अधिक होगी तथा नाक, कान, दाँन्त तथा मुख मंडल सुन्दर तथा दर्शनीय होंगे। आप एक उच्चकोटि की विदुषी होंगी तथा कई धार्मिक संस्थाओं में उच्च पदों को सुशोभित करने में समर्थ रहेंगी। धर्म के प्रति आपकी गहन निष्ठा रहेगी तथा प्रयत्नपूर्वक धर्म पालन में तत्पर रहेंगी। आप हमेशा प्रिय एवं मधुर वाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगी जिससे अन्यजन आपसे प्रभावित तथा खुश रहेंगे। सत्य का पालन करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगी तथा इसके पालन के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही सफाई या शुद्धता को भी आप जीवन में प्राथमिकता देंगी। आप में धैर्य का गुण भी विद्यमान रहेगा तथा समस्त कार्यों को धैर्य पूर्वक सम्पन्न करेंगी। परोपकार की भावना की प्रबलता भी आपके हृदय में रहेगी तथा इसके लिए आप तन मन धन

से हमेशा तत्पर रहेंगी। संसार के सभी प्राणियों के प्रति आपके मन में दया की भावना रहेगी। देखने में आप अत्यन्त सुन्दरता की मूर्ति होंगी तथा सम्पूर्ण जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत करेंगी। आपकी कन्या संतति अधिक तथा पुत्र संतति अल्प मात्रा में रहेगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारुदन्ताक्षिणिकर्णो।
विद्धानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

आप लज्जायुक्त तथा आलस्यपूर्ण सुन्दर दृष्टि से युक्त होकर गमन करेंगी। आपके बाहु तथा स्कन्ध भाग शिथिल रहेंगे। आप अपने जीवन काल में प्रसन्नता पूर्वक सांसारिक तथा भौतिक सुखों का उपभोग करेंगी। आपका शरीर भी कोमलता से युक्त रहेगा आप विभिन्न प्रकार की कलाओं के विषय में विषद् ज्ञान को प्राप्त करेंगी तथा नाना प्रकार के शास्त्रों का भी तत्व ज्ञान प्राप्त करने में आप सफलता प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप किसी अन्य व्यक्ति के मकान तथा धन का भी सुखपूर्वक उपभोग करने वाली होंगी। आप अन्य देश में भी बसने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी।

व्रीळामंथरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

अन्य जनों को अपनी हास्यमयी विलासमयी क्रियाओं तथा मुद्राओं से आकर्षित करने तथा प्रसन्न करने में भी सफलता प्राप्त करेंगी। आपका स्वभाव अत्यन्त सुशील तथा सरलता से युक्त रहेगा आप अच्छे कार्यो को करने के लिए सदा उत्सुक तथा प्रेरित होंगी दुष्कर्मो की आप हमेशा उपेक्षा करेंगी। इसके अतिरिक्त आप सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा भाग्य बल से अधिकाँश कार्यों में सिद्धि तथा सफलता प्राप्त करेंगी ।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आपकी बुद्धि छल से विहीन निर्मल तथा स्वच्छ रहेगी लेखन कार्य की ओर प्रारम्भ से ही आपकी बुद्धि अग्रसर रहेगी तथा काव्य सृजन में आप सफलता प्राप्त करेंगी। आपका चित्त हमेशा शान्त रहेगा तथा चंचलता का इसमें सर्वथा अभाव रहेगा। साथ ही गुरूजनों की भलाई के कार्यों में आप हमेशा तत्पर रहेंगी ।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।

भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरूजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आप विलासी प्रकृति से युक्त रहेंगी तथा विलासयुक्त भौतिक वस्तुओं पर दिल खोलकर व्यय करेंगी तथा इन सबका सुख पूर्वक उपभोग करेंगी। सज्जनों तथा विद्वानों के प्रति आपके मन में श्वद्धा एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा तथा दानशीलता की प्रवृति से भी आप सुशोभित रहेंगी एवं समय समय पर इस प्रवृति का पालन करेंगी। आप वैदिक धर्म का निष्ठा से पालन करने वाली होंगी तथा सत्य का पालन करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी। समस्त जीव तथा प्राणियों के प्रति आपके मन में दया एवं करूणा का भाव रहेगा संगीत तथा अभिनय में आपकी गहन रूचि रहेगी तथा आजीवन इनसे आपका संबध स्थापित रहेगा परन्तु गृहस्थ से आप

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप अपने सम्पूर्ण जीवन को सुख ऐश्वर्य एवं वैभव के साथ व्यतीत करेंगी। समाज के अन्य जनों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा तथा उनसे आपके संबध भी मधुरता पूर्ण रहेंगे तथा शास्त्रों के विषय में आपको विषद् ज्ञान रहेगा।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

देवगण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी श्रेष्ठ एवं प्रिय होगी। आप हमेशा सत्य बोलेंगी तथा जीवन में सत्य के पालन के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी। आपकी बुद्धि भी सरल होगी तथा सादगी से अपने विचार प्रकट करना तथा सादगी से लोगों की बातों को ग्रहण करना आपकी विशेषता रहेगी। आप शाकाहारी भोजन के प्रिय होंगी तथा गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा। साथ ही श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा वणित सद्गुणों से आप सर्वथा सुशोभित रहेंगी। आप सर्वप्रकार से सुसम्पन्न होंगी तथा किसी भी प्रकार का अभाव नहीं रहेगा। साथ ही आपके पास पूर्ण समृद्धि बनी रहेगी।

आप देखने में अत्यन्त सुन्दर तथा स्वस्थ प्रतीत होंगी तथा दानशीलता की प्रवृति स्वभाव से ही आपके मन में रहेगी। आप सादगी परस्त होंगी तथा भौतिकता से दूर रहेंगी। साथ ही आप समाज में विदुषी के रूप में पूजनीय भी होंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

महिष योनि में उत्पन्न होने के कारण आप समस्त लड़ाई झगड़ों विवादों तथा मुकदमों में हमेशा विजयी रहेंगी तथा आप की सन्तानों की संख्या भी अधिक रहेगी। आपकी प्रवृति वायुप्रधान होगी तथा धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा निष्ठा रहेगी।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरें से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए शुभ रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों

का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग, शनिवार, प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक होंगे। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10,15 तिथियों, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग, कौलवकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार, प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हश मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव गणेश जी की पूजा करनी चाहिए तथा गणेश चतुर्थी तथा बुधवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पन्ना, हरित वस्त्र, मूंग की दाल आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं थीं बुधाय नमः।